1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

तवेद्धि सख्यमस्तृतम्।

ऋग्वेद 1/15/5

हे प्रभो! आपकी मित्रता अटूट और अमृत है।

O Lord !
your friendship is ever lasting and divine.

वर्ष 40, अंक 9 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 26 दिसम्बर, 2016 से रविवार 1 जनवरी, 2017
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का 90वां बलिदान दिवस हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

शिक्षा केवल धन कमाने नहीं अपितु राष्ट्र निर्माण का साधन – मनीष सिसोदिया, उपमुख्यमन्त्री दिल्ली

आर्यसमाज ने मुझे सदैव मानवता की सेवा के लिए प्रेरित किया – डॉ. अशोक कुमार चौहान, संस्थापक एमिटी

राष्ट्र के वर्तमान परिपेक्ष्य में स्वामी श्रद्धानन्द और अधिक प्रासंगिक
– डॉ. सत्यपाल सिंह, सांसद

राष्ट्र, भाषा, धर्म, शिक्षा और संस्कृति की रक्षा हेतु सर्वस्व समर्पित कर श्रेष्ठ समाज का सृजन करें
– महाशय धर्मपाल, प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा

स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान – सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्व. सभा

– शेष पृष्ठ 4-5 व 8 पर

7 जनवरी से प्रगति मैदान में आरम्भ होगा वैदिक साहित्य प्रचार महायज्ञ

10 हिन्दी भाषी व 1 अंग्रेजी स्टाल पर फिर मचेगी धूम

आपके सहयोग से हजारों नए महानुभावों तक 10/– रु. में पहुंचाएंगे सत्यार्थ प्रकाश

उद्घाटन : 7 जनवरी, 2017 : प्रात:11:30 बजे **समापन : 15 जनवरी, 2017 : रात्रि 8 बजे**

हिन्दी : हॉल नं. 12ए स्टाल : 267–276

अंग्रेजी साहित्य : हॉल नं. 18 स्टाल : 304

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जोकि 50/– रुपये का है, सभा को 30/– रुपये में प्राप्त होता है। आप द्वारा प्रदान की गई 20/– सब्सिडी (छूट) से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अत: आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं से से निवेदन है कि अधिकाधिक प्रतियां 10/– में उपलब्ध कराने हेतु अधिकाधिक छूट सहयोग प्रदान करें।

सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य पर देने के लिए अपनी ओर से सहयोग प्रदान करें

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010009140900 एक्सिज बैक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री अनिरुद्ध आर्य मो. 9540040339 अथवा श्री मनोज नेगी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप डाक द्वारा अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। – *महामन्त्री*

वेद-स्वाध्याय

राजा वरुण सब कुछ जानता है

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतङ्क्म्।
द्वौ सन्निषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद् वेद वरुणस्तृतीयः।। - अथर्व. 4/16/2
ऋषिः **ब्रह्मा।।** देवता: **वरुणः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **यः तिष्ठति, चरित**= जो मनुष्य खड़ा है, या चलता है, **यः च वञ्चति** = जो दूसरों को ठगता है **यः निलायं चरति** = जो छिपकर कुछ करतूत करता है, **यः प्रतङ्कचरति**= जो दूसरों को भारी कष्ट आदि देकर अत्याचार करता है और **द्वौ सन्निषद्य**=जब दो आदमी मिल कर, एक-साथ बैठकर, **यत् मन्त्रयेते**= जो कुछ गुप्त मन्त्रणाएँ करते हैं **तत्** = उसे भी **तृतीयः** =तीसरा होकर **वरुणः राजा**= सर्वश्रेष्ठ सच्चा राजा परमेश्वर **वेद**= जानता है।

विनय-पाप से वास्तव में डरनेवाले मनुष्य संसार में विरले ही होते हैं। प्रायः लोग पाप करने से नहीं डरते, किन्तु पापी समझे जाने से डरते हैं। जहाँ कोई देखनेवाला न हो वहाँ अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाना, कोई पाप कर लेना, साधारण बात है। पाप व अपराधकर्म से बचने की कोई कोशिश नहीं करता; कोशिश तो इस बात की होती है कि हम वैसा करते हुए कहीं पकड़े न जाएँ। यही कारण है कि मनुष्य अपने बहुत-से कार्य छिपकर अकेले में करने को प्रवृत्त होता है, परन्तु यदि उसे इस संसार के सच्चे, एकमात्र राजा वरुणदेव की जानकारी हो तो वह ऐसे घोर अज्ञान में न रहे। यदि उसे मालूम हो कि वे जगत् के ईश्वर वरुण भगवान् सर्वव्यापक और सर्वद्रष्टा हैं तो वह पाप के आचरण करने से डरने लगे; वह एकान्त में भी कभी पाप में प्रवृत्त न हो सके। यदि हम समझते हैं कि हम कोई काम गुप्तरूप में कर सकते हैं तो सचमुच हम बड़े धोखे में हैं। उस सर्वद्रष्टा, सर्वव्यापक वरुण से तो कुछ भी छिपाकर करना असम्भव है। जब हम दो आदमी कोई गुप्त मन्त्रणा करने के लिए किसी अँधेरी-से-अँधेरी कोठड़ी में जाकर बैठते हैं और सलाहें करने लगते हैं, तो यद्यपि हम समझ रहे होते हैं कि हम दोनों के सिवाय संसार में और कोई इन बातों को नहीं जानता, तथापि इन सब बातों को वह वरुण देव वहीं तीसरा होकर बैठा हुआ सुन रहा होता है। यदि हम वहाँ से उठकर किसी किले में जा बैठें, या किसी सर्वथा निर्जन वन में पहुँच जाएँ तो वहाँ पर भी वह वरुणदेव तो तीसरा साक्षी होकर पहले से बैठा हुआ होता है। उससे छिपाकर हम कुछ नहीं कर सकते। यदि हम दूसरे किसी आदमी को भी कुछ नहीं बताते, केवल अपने ही मनमें कुछ सोचते हैं, तो वह वरुण उसे भी जानता है, सब सुनता है। हमारे चलने या ठहरने को, हमारी छोटी-से-छोटी चेष्टा को वह जानता है, जब हम दूसरों को धोखा देते हैं, ठग लेते हैं और समझते हैं कि इसका किसी को पता नहीं लगा, तब हम स्वयं कितने भारी धोखे में होते हैं! क्योंकि, उस वरुण को तो सब-कुछ पता होता है और हमें उसका फल भोगना पड़ता है।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

महाराणा प्रताप भी पैदा होंगे?

अभी हाल ही में मीडिया के माध्यम से पता चला कि एक फिल्म अभिनेता ने अपने नवजात बच्चे का नाम तैमूर रखा है। जिसे लेकर सोशल मीडिया में काफी शोर मचा है जबकि बच्चे के माता-पिता का तर्क है कि तैमूर का उर्दू में मतलब होता है लोहा यानी लोहे की तरह मजबूत। अभी पिछले दिनों एक टीवी डिबेट में पाकिस्तानी मूल के लेखक-विचारक तारेक फतेह ने कहा था। मुझे बड़ा अफसोस होता है कि भारतीय मुस्लिम आज भी अपने नाम अरबी भाषा में रखते हैं जबकि हिंदी भाषा में एक से एक सुन्दर नाम हैं। आखिर शम्स की जगह सूरज नाम रखने में क्या आपत्ति है? जबकि दोनों का शाब्दिक अर्थ एक ही है। हालाँकि यह तारेक फतेह का तर्क है लेकिन सवाल यह है कि तैमूर नाम रखने पर इतना बड़ा बवाल क्यों? आखिर कौन था तैमूर? जबकि इसी इस्लाम और भाषा में दारा शिकोह, अशफाक उल्ला खान से लेकर मिसाइल मैन ए पी जे अबुल कलाम तक बहुत ऐसे नाम हैं जो इस्लाम में ही पैदा हुए है और जिनका नाम सुनते ही सर श्रद्धा से नमन करता है।

इतिहास कहता है कि तैमूर के लिए लूट और कत्लेआम मामूली बातें थीं। इसी कारण तैमूर हमारे लिए अपनी एक जीवनी छोड़ गया जिससे पता चलता है कि उन तीन महीनों में क्या हुआ जब तैमूर भारत में था दिल्ली पर चढ़ाई करने से पहले तैमूर के पास कोई एक लाख हिंदू बन्दी थे। उसने इन सभी को कत्ल करने का आदेश दिया। तैमूर ने कहा कि ये लोग एक गलत धर्म को मानते हैं इसलिए उनके सारे घर जला डाले गए और जो भी पकड़ में आया उसे मार डाला गया। जिसने दिल्ली की सड़कों पर खून की नदियाँ बहा दी थी। सैकड़ों मंदिरों को अपने पैरों तले कुचल दिया था। हजारों नवयुवतियों का इस आक्रान्ता ने शील भंग किया। इतिहासकार कहते हैं कि दिल्ली में वह 15 दिन रहा और उसने पूरे शहर को कसाईखाना बना दिया था। इसके बाद भी तैमूर नाम रखने के पीछे आखिर इस सिने अभिनेता और अभिनेत्री का उद्देश्य क्या है?

एक पल को मान भी लिया जाये नाम तो नाम ही होता है। उससे इन्सान की महत्ता कम नहीं होती पर हमारे समाज में जब किसी बच्चे का नाम रखा जा रहा है तो तमाम बातें ध्यान रखी जाती हैं। नाम ऐसा न हो कि उसे स्कूल या कॉलेज में चिढ़ाया जाए। हमारे यहां किसी को चिढ़ाना हो तो उसके नाम में से ही कुछ ऐसा निकाला जाता है ताकि वह चिढ़ जाए। शायद यही वजह है कि दुर्योधन, विभीषण, कंस और रावण जैसे नाम किसी के नहीं रखे गए। यदि किसी का नाम कंस हो तो पहली छवि उसके क्रूर होने की बनेगी। जबकि विभीषण लंका जीत में राम की सेना में मुख्य किरदार था। लेकिन फिर भी उसे देशद्रोही माना गया कि जो अपने सगे भाई का नहीं हुआ वो किसी का कैसे हो सकता है! ज्यादा दूर नहीं जाएं तो ''प्राण'' नाम भी बहुत कम सुनने को मिलता है। सिने जगत के मशहूर 'प्राण' निहायत ही शरीफ इंसान थे, लेकिन परदे पर हमेशा बुराई के साथ खड़े रहते थे इसलिए लोगों ने बच्चों के नाम प्राण नहीं रखे। प्राण की बेटी ने तो एक सर्वेक्षण ही कर डाला था कि फलां सन् के बाद कितने लोगों ने बच्चों के नाम प्राण रखे हैं और नतीजा लगभग शून्य ही रहा।

भारत की सहिष्णुता और धर्मनिर्पेक्षता का यही जीवित प्रमाण है कि यहाँ अकबर, बाबर और औरंगजेब जैसे नाम रखने पर कोई कुछ नहीं बोलता इसे सिर्फ एक धर्म का विषय माना जाता रहा है। वरना विश्व के किसी देश में ऐसी मिसाल नहीं मिलेगी। शायद ही किसी की हिम्मत हो कि इजराइल में कोई अपने बच्चे का नाम हिटलर रखे? जर्मनी में कोई अपने बच्चे का नाम स्टालिन रखे? अमेरिका में कोई ओसामा पैदा हो तो वहां के लोग ही उस व्यक्ति का जीना मुश्किल कर देंगे। लेकिन भारत एकमात्र ऐसा देश है, जहाँ भारत को लूटने वाले और असंख्य भारतीयों को मौत के घाट उतारने वाले लोगों के नाम पर लोग अपने बच्चों का नामकरण करते हैं। आखिर किस आधार पर उन्हें अपना आदर्श मानते हैं? तैमूर और बाबर जैसे आक्रान्ताओं के नाम पर अपने बच्चों का नाम रखने वाले किस मानसिकता और विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं?

एक सवाल यह भी है कि जब यह लड़का आगे समाज में जाएगा, स्कूल में जाएगा, जहाँ बच्चे को इतिहास में यह बताया जाएगा कि तैमूर लंग एक विदेशी आक्रमणकारी था जिसने लाखों हिन्दुओं का खून बहाया और मदिरों को तोड़ा तब क्या यह बालक तैमूर खुद को स्वीकार कर पायेगा? शायद नहीं! क्योंकि कोई भी सभ्य समाज अपने बच्चे का नाम इन नकारात्मक छवि वाले लोगों के नाम पर नहीं रखता। कौरव 100 भाई थे। लेकिन कोई भी माँ बाप इन 100 नामों में से एक भी नाम अपने बच्चों का नहीं रखता। पर वहीं पांचों पांडवों के नाम पर और दशरथ के चारों पुत्रों के नाम पर लोग अपने बच्चों के नाम रखते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कौन सत्य के साथ खड़ा था और कौन असत्य के साथ।

त्रेतायुग युग में मर्यादा पुरषोत्तम राम हुए। आगे चलकर इस नाम पर भारत की करोड़ों जनता ने अपना नाम रखा। बच्चे का नाम राम रखने का अर्थ था राम के पदचिह्नों पर चलना। हमारे यहाँ नामों की कोई कमी नहीं है। वीर अब्दुल हमीद से लेकर वीर शिवाजी तक यहाँ एक से एक वीरों के नाम से इतिहास भरा पड़ा है। पर मुझे कोई बता रहा था कि जब मजहब विशेष में कोई स्वामी दयानन्द, श्रद्धानन्द, मर्यादा पुरषोंत्तम राम, श्री कृष्ण, भगत सिंह आदि पैदा ही नहीं होते तो फिर कहाँ से ऐसे आदर्श नाम लायें? इनके यहाँ तो तैमूर, औरंगजेब, चंगेज खाँ, गजनी, गौरी, दाऊद, ओसामा आदि ही जन्म लेते हैं तो फिर इन्हीं में से किसी एक नाम को चुनना मजबूरी भी हो सकती है। बहरहाल आज तैमूर पैदा हुआ है तो कल जरूर किसी न किसी माता की कोख से महाराणा प्रताप भी पैदा होंगे। - ***सम्पादक***

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपने मोबाइल की रिंग टोन एवं कॉलर ट्यून

(Download Mobile Ring Tune & CallerTunes)

मोबाइल ट्यन - रिंग टोन/कॉलर ट्यून को कई बार हम व्यक्ति विशेष की पहचान के लिए प्रयोग करते हैं। वहां हमारी कॉलर टयून/रिंग टोन ही हमारी पहचान होती है। तो आइए हम मिलकर अपने आपको महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज को समर्पित करें और अपने मोबाईल में ऐसी ट्यून सैट करें कि आस-पास खड़ा कोई भी व्यक्ति हमें जान जाए कि हम आर्यसमाज के सदस्य हैं, महर्षि दयान्द सरस्वती जी के मानस पुत्र हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रयासों को कुछ सुप्रसिद्ध गीतों की ट्यन बनवाई गई है जोकि अनेक मोबाइल कम्पनियों द्वारा स्वीकार की गई हैं। आइए, हम अपने पसन्दीदा गीत को अपनी पहचान बनाएं। नीचे दिए गए गीतों में से किसी भी गीत को अपनी ट्यून बनाने के लिए अपनी मोबाईल कम्पनी के निर्देशानुसार डायल/एस.एम.एस. करें। गीतों के चयन के लिए सभा की वैबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर लॉगऑन करें अथवा **http://www.binacatunes.com/Home/Search_?keyword=dev+dayanand** पर क्लिक करें।

क्या जीवती वापस आएगी?

पाकिस्तान के सिंध की जीवती की उम्र बमुश्किल 14 साल की है लेकिन उसको अब अपने परिवार से दूर जाना है क्योंकि उसकी शादी कर दी गई है। जिस आदमी से उसकी शादी हुई है, उसने जीवती को अपने कर्ज के बदले खरीद लिया है। जीवती की मां अमेरी खासी कोहली बताती है कि उनके शौहर ने कर्ज लिया था जो बढ़कर दोगुना हो गया और वह जानती है कि इसे चुकाना उनके बस की बात नहीं है। रकम न चुका पाने पर अमेरी की बेटी को वह शख्स ले गया जिससे उन्होंने उधार लिया था। अमेरी को पुलिस से भी इस मामले में कोई उम्मीद नहीं है। अमेरी कहती है कि सूदखोर अपने कर्जदार के बदले सबसे खूबसूरत और कमसिन लड़की को चुन लेते हैं। ज्यादातर मामलों में वह लड़की को इस्लाम में दाखिल करते हैं फिर उससे शादी करते हैं और फिर कभी वह बेटी वापस नहीं आती। औरतों को यहां प्रॉपर्टी की तरह ही देखा जाता है। उसे खरीदने वाला उसे बीवी बना सकता है, दूसरी बीवी बना सकता है, खेतों में काम करा सकता है, यहां तक कि वह उसे जिस्म फरोशी के धंधें में भी धकेल सकता है क्योंकि उसने उसकी कीमत चुकाई है और वह उसका मालिक बन गया है। लड़की को ले जाने वाला, उससे कुछ भी करा सकता है। लड़की हिन्दू है तो अब वापस नहीं आएगी।

अमेरी और उनकी बेटी जीवती की यह कहानी टाइम्स ऑफ इंडिया ने प्रकाशित की है लेकिन पाकिस्तान में इस तरह की यह कोई अकेली घटना नहीं है। ग्लोबल स्लेवरी इंडेक्स 2016 की रिपोर्ट कहती है कि 20 लाख से ज्यादा पाकिस्तानी हिन्दू गुलामों की जिंदगी बसर कर रहे हैं, शायद इन आंकड़ों से उन छद्म पंथनिरपेक्षता वादियों का चेहरा बेनकाब हो जायेगा जो भारत में मानवतावादी बनने का ढोंग करते हैं। आज पाकिस्तान के झंडे पर अर्धचंद्र और सितारे हैं और सफेद बॉर्डर पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन यह वास्तव में दुखद और शर्मनाक है कि छः दशकों के बाद भी पाकिस्तान में हिन्दुओं पर जो अत्याचार हो रहे हैं अब वह अंतर्राष्ट्रीय चिंता का विषय बन गया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान में हर साल 1000 हिन्दू और ईसाई लड़कियों (ज्यादातर नाबालिग) को मुसलमान बनाकर शादी कर ली जाती है। धन बाई पाकिस्तान के उन सैंकड़ों हिन्दू माताओं में से हैं जिनकी बेटियों को मुसलमान बनाकर उनकी जबरन शादी कर दी गयी है। 52 वर्षीय धन बाई जो कराची के लयारी इलाके में एक कमरे के फ्लैट में अपनी दो बेटियों और पति के साथ रहती हैं। तीन साल पहले धन बाई की 21 वर्षीय बेटी बानो घर से अचानक गायब हो गई थी और फिर परिवार को पता चला कि वह मुसलमान बन चुकी है और उसकी शादी हो गई है। बानो हर रोज गरीबों की मदद करने जाती थी, क्या पता था कि वह कभी वापस भी नहीं आएगी। कराची हिंदू पंचायत के मुताबिक हर महीने 20 से 22 ऐसे मामले सामने आते हैं जिसमें लड़कियों को मुसलमान बनाया जाता है और फिर उनकी जबरन शादी की जाती है। धन बाई पिछले तीन सालों से अपनी बेटी की राह देख रही है और अदालतों के चक्कर काट रही है लेकिन तीन सालों के भीतर वह अपनी बेटी बानो को एक बार भी नहीं देख सकी है।

दक्षिण पाकिस्तान में इस तरह के काफी मामले सामने आते हैं। मानवाधिकार संगठनों और पुलिस की कोशिशों से अगर कोई लड़की मिल भी जाती है और उसे वापस मां-बाप को देने की बात होती है तो ज्यादातर मौकों पर लड़की अपनी मर्जी से शौहर के साथ जाना कबूल कर लेती है। ऐसा अमूमन इसलिए भी होता है क्योंकि वह नहीं चाहती कि बाद में उनकी वजह से उनके मां-बाप को किसी परेशानी या जुल्म का सामना करना पड़े। हिन्दू अधिकार कार्यकर्ता शंकर मेघवर के मुताबिक दस वर्षीय जीवनी बघरी को 12 फरवरी 2014 को घोटकी से अगवा कर लिया गया था।13 महीने बाद उसे 11 मार्च 2015 को स्थानीय सत्र अदालत के न्यायाधीश ने वापस अपहर्ताओं को सौंप दिया। अदालत ने कहा कि अब वह इस्लाम कबूल कर चुकी है ऐसे में वह अपने माता-पिता के साथ नहीं जाना चाहती। पिछले वर्ष 14 दिसंबर को एक अन्य मामले में चार हथियारबंद लोग भील समुदाय के एक घर में घुसे और 13 वर्षीय सिंधी लड़की जागो भील का अपहरण कर लिया था। मेघवर कहते हैं पाकिस्तान का कानून 18 साल से कम आयु की लड़की की शादी को अपराध मानता है। लेकिन हिन्दू लड़कियों के मामले में अदालत खामोश रहती है क्यों? न्याय के लिए कहां जाएं? किससे गुहार लगाएं?

पाकिस्तान में इस तरह के मामलों के लिए लड़ने वाले एक संगठन से जुड़े गुलाम हैदर कहते हैं कि वे खूबसूरत लड़कियों को चुनते हैं। धर्म से जुड़े इन मामलों में न मीडिया के कैमरे पहुंचते हैं न पुलिस स्टेशन में इनकी कोई सुनवाई होती है। इन मामलों में अधिकांश इस्लामी धार्मिक गुटों के लोग लिप्त हैं और इस्लामी मदरसों के छात्र भी ऐसा कर रहे हैं। शहर के बड़े मदरसे मुसलमान होने का प्रमाण पत्र जारी कर देते हैं। दुर्दशा के शिकार पाकिस्तानी हिन्दू भारत को अपनी आखिरी आस मानते हैं। पाकिस्तान के हर छात्र को स्कूल में कुरान पढ़ना जरूरी है। इसकी अवमानना ईशनिंदा की परिधि में आती है। यदा-कदा इस कानून की आड़ में कट्टरपंथी निर्दोष हिन्दुओं और अन्य गैर इस्लामियों के साथ अत्याचार करते हैं। पिछले दिनों बीबीसी से प्रकाशित एक रिपोर्ट से साफ हो गया था कि जबरन शादी ही नहीं बल्कि हिन्दुओं को नौकरी भी नहीं दी जाती, अल्पसंख्यकों को पाकिस्तान में जीवन बसर करने के लिए हर रोज तरह-तरह की परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है, ऐसी परेशानियां जिनके बारे में भारत के नागरिक तो कल्पना भी नहीं कर सकते।

संध्या के पिता बिशन दास ने संध्या को एक कान्वेंट स्कूल में पढ़ाया और उसके बाद उच्च शिक्षा के लिए यूनिवर्सिटी भी भेजा। संध्या ने भी अपने पिता के सपनों को टूटने नहीं दिया और खूब मन लगाकर पढ़ाई की। संध्या यूनिवर्सिटी से (एम.एस.सी) की डिग्री तो हासिल करने में सफल रही लेकिन नौकरी नहीं क्योंकि वह हिन्दू थी। उसे बताया गया जब तक वह इस्लाम स्वीकार नहीं करेगी तब तक नौकरी नहीं मिलेगी। कराची हिन्दू पंचायत के अध्यक्ष अमरनाथ कहते हैं कि सबसे बड़ी समस्या यह है कि जब यह मामला सामने आता है तो सब लोग खुश हो जाते हैं, पड़ोसी हैं तो वह भी खुश हो जाता हैं कि एक और मुसलमान हो गया। यहाँ हिन्दू समुदाय को घरों से निकालना और उन्हें मुसलमान बनाना एक योजना के तहत हो रहा है। इसमें सबसे दुखद बात यह है कि हमारे देश के तथाकथित मानवाधिकार कार्यकर्ता जो किसी भी बात पर चौराहों पर लेट जाते हैं, इन हिन्दुओं का दर्द उन्हें नहीं दिखता, क्या वे मानव नहीं हैं? क्या उनका कोई मानवाधिकार नहीं है? क्या हिन्दुओं के हित में बोलना साम्प्रदायिकता है? हिन्दू भी तो एक इंसान है, मानव है तो सबसे ऊपर उठकर उसके अधिकारों की रक्षा भी तो होनी चाहिए। परन्तु भारत में मानवाधिकार संगठन हो या कोई अन्य संगठन भी वह सिर्फ उसी बात पर आवाज उठाते हैं जिससे उनका निजी स्वार्थ हो। हो सकता है इस लेख के बाद कुछ लोग हमें भी सांप्रदायिक समझेंगे, परन्तु बहुत विनम्रता के साथ यह बताना चाहते हैं कि हम मानववादी हैं और जहाँ कहीं भी प्राणी मात्र के साथ अन्याय होता है उसके खिलाफ बोलना अपना फर्ज समझते हैं यदि ऐसा करना किसी की नज़र में सांप्रदायिकता है तो हमें गर्व है कि हम सांप्रदायिक हैं।

- राजीव चौधरी

.....कराची हिन्दू पंचायत के अध्यक्ष अमरनाथ कहते हैं कि सबसे बड़ी समस्या यह है कि जब यह मामला सामने आता है तो सब लोग खुश हो जाते हैं, पड़ोसी हैं तो वह भी खुश हो जाता हैं कि एक और मुसलमान हो गया। यहाँ हिन्दू समुदाय को घरों से निकालना और उन्हें मुसलमान बनाना एक योजना के तहत हो रहा है। इसमें सबसे दुखद बात ये है कि हमारे देश के तथाकथित मानवाधिकार कार्यकर्ता जो किसी भी बात पर चौराहों पर लेट जाते हैं, इन हिन्दुओं का दर्द उन्हें नहीं दिखता, क्या वह मानव नहीं हैं?.....

बोध कथा

ज्ञानी जग में रहत भी लिप्तमान हो नाहिं

एक थे लाला जी। काफ़ी बूढ़े हो गए थे। दाना दलने की एक चक्की थी उनकी। दुकान पर बैठे थे। बूढ़े होने पर भी दाना दल रहे थे। दलते जाते, कहते जाते-''इस जीवन से तो मौत अच्छी है!''

इसी समय एक साधु दुकान के पास से होकर निकले। उन्होंने लालाजी के ये शब्द सुने; सोचा-'कितना दुःखी है यह व्यक्ति! इसकी सहायता करनी चाहिये।' उसके पास जाकर बोले-''लाला, बहुत दुःखी है तू। मेरे पास एक विद्या है। यदि तू चाहे तो तुझे स्वर्ग ले-जा सकता हूं। चलता है तो चल। इस दुःख से छुटकारा मिल जायेगा।''

लाला ने साधु की ओर देखा; बोला-''बहुत दयावान् हो तुम, परन्तु मैं जा कैसे सकता हूं? इतना बूढ़ा हो गया, अभी तक कोई सन्तान नहीं हुई। सन्तान हो जाय तो चलूंगा अवश्य।''

साधु ने कहा-''बहुत अच्छा।'' और चला गया। कुछ वर्षों के बाद लाला के दो बेटे हो गए। साधु ने वापस आकर कहा-''चलो लाला! अब तो तुम्हारी सन्तान हो गई।''

लाला ने कहा-''हो तो गई, परन्तु अभी तक वह किसी योग्य तो नहीं। लड़के तनिक बड़े हो जायें, तब तुम आना। मैं चलूंगा अवश्य।'' लड़के बड़े हो गये। साधु फिर आया तो दुकान पर लाला नहीं था। पूछा उसने कि लाला कहां हैं? तो पता लगा कि मर गये। साधु ने योगबल से देखा कि मरकर वह गया कहां? तभी पता लगा कि दुकान के बाहर जो बैल बंधा है, वही पिछले जन्म का लाला है। उसके पास जाकर साधु ने कहा-''अब चलेगा स्वर्ग को?''

लाला ने सिर हिलाके कहा-''कैसे जाऊं! बच्चे अभी ना-समझ हैं। मैं चला गया तो कोई दूसरा बैल ले आयेंगे। जितनी अच्छी प्रकार मैं बोझ उठाता हूं, उतनी अच्छी प्रकार वह उठायेगा नहीं। मेरे बच्चों को हानि हो जायेगी। ना भाई! अभी तो मैं नहीं जा सकता, कुछ देर और ठहर जा।''

पांच वर्ष व्यतीत हो गये। साधु फिर वापस आया। देखा-दुकान के सामने अब बैल भी नहीं है। दुकान के नये स्वामियों ने एक ट्रक खरीद लिया है। उसने इधर-उधर से पूछा कि बैल कहां गया? ज्ञात हुआ, बोझ ढोते-ढोते मर गया। साधु ने फिर अपने योगबल से ढूंढा। देखा-वह अपने घर के द्वार पर कुत्ता बनके बैठा है। साधु ने उसके पास जाकर कहा-''अब तो बोझ ढोने की बात भी नहीं रही। अब चल तुझे स्वर्ग ले चलूं।''

कुत्ते के शरीर में बैठे लाला ने कहा-'अरे कैसे ले चलेगा! देखता नहीं कि मेरी बहू ने कितने आभूषण पहन रखे हैं? मेरे लड़के घर में नहीं, यदि कोई चोर आ गया तो बहू को बचायेगा कौन? नहीं बाबा! तुम जाओ, अभी मैं नहीं जा सकता।'

साधु चला गया। एक वर्ष के बाद वापस आकर उसने देखा कि कुत्ता भी मर गया है। उसने फिर योगबल के द्वारा उसे खोजा। ज्ञात हुआ कि वह अपने घर के पास बहने वाली गन्दी नाली में मेंढक बन के बैठा है। साधु ने उसके पास जाकर कहा-'देखो लाला! क्या इससे बड़ी दुर्गति भी कभी होगी? कहां से कहां पहुंच गए हो तुम! अब भी मेरी बात मानो। आओ तुम्हे स्वर्ग ले चलूं।'

मेंढक ने चिल्लाकर कहा-'चला जा यहां से! क्या मैं ही रह गया हूं स्वर्ग जाने क लिये? और लोग क्या मर गये हैं? उनको ले जा। मुझे यहीं पड़ा रहने दे। यहां पोतों को आते-जाते देखकर प्रसन्न होता हूं। स्वर्ग में क्या मैं तेरा मुख देखा करूंगा?

यह है मोह के चक्र में फंसे रहने का परिणाम! यह मोह आत्मा को नीचे-ही-नीचे धकेलता चला जाता है। नहीं, इस प्रकार कर्म मत करो। कर्म करो अवश्य, मोह और ममता से परे हटकर।

जूं जल भीतर कंवल रहे, जल में डूबे नाहिं। श्रानी जग में रहत भी, लिप्तमान हो नाहिं। **साभार : बोध कथाएं**

उद्‌बोधन देते स्वामी सम्पूर्णानन्द जी

स्वामी प्रणवानन्द जी

बलिदान भवन में यज्ञ सम्पन्न कराते पं. सहदेव शास्त्री

हरियाणा सभा के प्रधान मा. रामपाल एवं श्री सतीश चड्ढा

उप मुख्यमन्त्री मनीष सिसोदिया को महर्षि दयानन्द जी का चित्र भेंट अधिकारीगण

डॉ. सत्यपाल सिंह जी को स्मृति चिह्न भेंट करते महाशय धर्मपाल जी, सुरेशचन्द्र आर्य जी, मा. रामपाल जी, कन्हैयालाल आर्य जी, प्रेम अरोड़ा जी, राजेन्द्र कुमार जी एवं श्री सुरेन्द्र रैली जी

डॉ. अशोक कुमार चौहान, संस्थापक अध्यक्ष एमिटी को स्मृति चिह्न भेंट करते महाशय धर्मपाल जी, सुरेशचन्द्र आर्य जी, कीर्ति शर्मा जी एवं श्री आनन्द चौहान जी

श्री सुरेन्द्र सिंह नेगी को पं. ब्रह्मानन्द शर्मा आर्य कार्यकर्ता पुरस्कार

श्री बाल किशन आर्य को लख्मी चन्द भूरो देवी स्मृति पुरस्कार

श्री दिनेश आर्य को महात्मा प्रभुआश्रित स्मृति पुरस्कार

श्री वरुणेन्द्र कथूरिया को डॉ. मुमुक्षु आर्य अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल पुरस्कार

श्री ऋषिराज वर्मा को वेद प्रकाश कथूरिया स्मृति पुरस्कार

दो अंग्रजी पुस्तकों 'स्वामी श्रद्धानन्द' और 'हिन्दू संगठन' का विमोचन

'शिक्षा के क्षेत्र में मैं जो परिवर्तन करने की कोशिश कर रहा हूं उसकी सोच स्वामी दयानन्द सरस्वती जी व स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों से ही प्राप्त करता हूं। शिक्षा धन कमाने का साधन नहीं अपितु राष्ट्र निर्माण का साधन होंी चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की पुनर्स्थापना करके विश्व को यही सन्देश दिया। मेरा मानना है कि 12 साल की शिक्षा के बाद जो बच्चा स्कूल से निकले वह आधुनिक विज्ञान की सोच ही नहीं वरण भारतीय वैदिक संस्कृति का ज्ञान भी प्राप्त करके निकले।' ये उद्गार दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मनीष सिसोदिया जी ने आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी के 90वें बलिदान दिवस पर रामलीला मैदान नई दिल्ली में आयोजित विशाल सार्वजनिक सभा में 25 दिसम्बर 2016 को प्रकट किए।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रात: काल 8 बजे बलिदान भवन, नया बाजार में आचार्य सहदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ।

यज्ञोपरान्त प्रात: 10 बजे विशाल शोभा यात्रा का शुभारम्भ वेद मन्त्रोच्चारण एवं उच्च वैदिक जयघोष के साथ जिसमें ओ३म् ध्वज को श्रीमती प्रभा आर्य व श्रीमती अनीता कुमार लेकर चलीं जिसका नेतृत्व रथ पर विराजमान स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, श्री विनय आर्य महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सुरेन्द्र रैली वरिष्ठ उपप्रधान, श्री सतीश चड्डा महामंत्री, श्री अरुण वर्मा, श्री योगेश आर्य, श्री एस. पी. सिंह आर्य केन्द्रीय सभा के दिशा निर्देशन में हुआ।

पारित हुए महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव

1. **समान नागरिक संहिता के सरकारी प्रस्ताव का आर्यसमाज स्वागत करता है।**
2. **भ्रष्टाचार और कालेधन के खिलाफ मुहीम में आर्यसमाज सरकार के सकारात्मक कदमों का समर्थक।**
3. **बेटी पढ़ाओ-बेटी बचाओ के लिए आर्यमाज बढ़-चढ़कर कार्य करता रहा है और आगे भी करता रहेगा।**

90वीं स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती शोभा यात्रा बलिदान भवन नया बाजार, लाहौरी गेट से चलकर, खारी बावली, चांदनी चौक, टाउन हाल, नई सड़क तथा अजमेरी गेट होती हुई, लगभग तीन किलोमीटर का सफर तय कर 1 बजे रामलीला मैदान में पहुंची जिसमें दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, आर्य वीरदल एवं वीरांगना दलों, विभिन्न आर्य अनाथालयों, आर्य समाजी संस्थाओं तथा आर्य विद्यालयों ने अपनी- अपनी सुन्दर झाकियों का निर्माण कर महर्षि दयानन्द एवं देश भक्तों के चित्रों, कलाकृतियों, वेदमन्त्रों से लिखित बैनरों, ओ३म् की पताकाओं से अच्छी प्रकार सजाया हुआ था। आर्यवीर एवं वीरांगना दल के सदस्य अपने गणवेश में सुसज्जित पंक्तिबद्ध जयघोष करते, ईश्वरभक्ति, देशभक्ति तथा ऋषिभक्ति से ओत्-प्रोत् मधुर भजन संगीत से पुरानी दिल्ली का वातावरण नूतन व भक्तिमय हो रहे थे। आर्य वीर एवं वीरांगनाओं के आसन मल्खम, भाला एवं तलवार बाजी से युद्ध कौशल प्रदर्शन कर रहे थे। बस, टैम्पो-ट्रक आदि बैनरों से सुसज्जित आर्य समाज की टोलियां जयघोष एवं भजन कीर्तन तथा प्रेरक झांकियां सुशोभित एवं मनोहारी प्रतीत हो रही थीं। दिल्ली के विभिन्न आर्य विद्यालयों व गुरुकुलों ने झांकियां और नुक्कड़ नाटिकाओं द्वारा बहुत सुन्दर आर्यसंदेश जनसाधरण तक पहुंचाने का प्रयास किया। इस श्रृंखला में दयानन्द आदर्श विद्यालय-तिलकनगर, आर्य कन्या सी.से. स्कूल-बिरला लाईन्स, रत्न चन्द आर्य पब्लिक स्कूल-विनय नगर, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल-शादी खामपुर, आर्य शिशुशाला-ग्रेटरकैलाश-1, आर्य पब्लिक स्कूल, आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी, आर्य वीरागंना दल आर्यसमाज जनकपुरी सी ब्लाक, आर्यसमाज कीर्तिनगर, आर्य

- शेष पृष्ठ 8 पर

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा नव प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तक 'स्वामी श्रद्धानन्द' एवं 'हिन्दू संगठन' का विमोचन करते मंचस्थ अतिथि एवं अधिकारीगण

श्री विजय भाई रूपानी, मुख्यमंत्री, गुजरात द्वारा ऋषि बोधोत्सव टंकारा में आने का आतिथ्य स्वीकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा प्रति वर्ष ऋषि बोधोत्सव शिवरात्रि पर मनाया जाता है। इस वर्ष 23, 24 व 25 फरवरी 2017 को टंकारा राजकोट गुजरात में भव्य समारोह पूर्वक ऋषि बोधोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस सिलसिले में 6 दिसम्बर को श्री सुरेश चन्द्र आर्य (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) के नेतृत्व श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट के प्रतिनिधि तथा गुजरात प्रतिनिधि सभा के प्राधिकारी गुजरात के मुख्य मंत्री श्री विजय भाई रूपानी से उनके कार्यालय में उन्हें ऋषि बोधोत्सव पर मुख्यअतिथि के रूप में आमन्त्रित करने गये। जिसके लिए मुख्य मंत्री जी ने अपने आने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की है।

-सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

आर्य समाज सागरपुर एवं माता चन्नन देवी अस्पताल द्वारा नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर सम्पन्न

आर्य समाज सागरपुर एवं माता चन्नन देवी अस्पताल के तत्त्वावधान में 18 दिसम्बर 2016 को आर्य समाज मन्दिर सागरपुर में नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया गया। शिविर का उद्घाटन क्षेत्रीय निगम पार्षद श्री प्रवीण राजपूत ने किया। मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी (एम. डी.एच.) थे। विशिष्ठ अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी थे साथ में माता चन्नन देवी अस्पताल के चिकित्सक उपस्थित थे। शिविर में आंखों की जांच, ब्लड प्रैशर, ब्लड शुगर, ई.सी.जी., आदि की जांच एवं दवाओं का नि:शुल्क वितरण किया गया। शिविर में आर्य समाज सागरपुर की ओर से नि:शुल्क चश्में वितरित किये गये। उद्घाटन भाषण में महाशय जी ने कहा,'सेवा करने से सुख मिलता है। अत: सेवा कार्य करते रहने चाहिए। इस प्रकार के शिविरों का आयोजन और अधिक करो जिससे जरूरत मन्दों की सहायता हो सके।' महाशय जी ने कहा 'जिन लोगों को जांच के दौरान आंखों के ऑपरेशन की जरूरत होगी उनके ऑपरेशन माता चन्ननदेवी में नि:शुल्क किये जाएंगे।' निगम पार्षद प्रवीण राजपूत ने कहा कि आर्य समाज द्वारा किया जा रहा कार्य अत्यन्त सराहनीय है। आर्य समाज को हमेशा अपने कार्यों के लिए मेरा सहयोग मिलता रहेगा। इस अवसर पर प्रधान श्री सुखवीर सिंह के 95 वर्षीय पिता का महाशय जी ने पटका पहनाकर सम्मान किया। शिविर में 279 मरीजों के पंजीकरण हुए।

-मान्धाता सिंह आर्य, मन्त्री

दीप प्रज्ज्वलित करके स्वास्थ्य जांच शिविर का शुभारम्भ करते महाशय जी। शिविर में आए महानुभावों की जांच करते डॉक्टर एवं इस अवसर पर आर्यसमाज सागर पुर के प्रधान श्री सुखबीर सिंह आर्य जी के 95वर्षीय पिताजी श्री श्योदान सिंह जी को महाशय जी ने पीत वस्त्र पहनाकर सम्मानित भी किया।

Glimpses of the YajurVeda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

The Cosmic Man

The significance of Purusha Sukta is established from the fact that it finds place in all the four Texts of the Vedas with some alterations. In Yajurveda it has 22 verses, in Rigveda 16 verses, in Samaveda 5 verses and in Atharva Veda 16 verses.

The hymn visualises God in the form of a living creature with millions of heads, millions of eyes, millions of feet, as it were. His heads, eyes and feet mentioned in the hymn display His vastness and immeasurability. The visible creation forms a tiny work of the master Artificer. If He were to hold the earth in the palm of His hand, the hand would touch the earth in all directions and yet will remain free with all the ten fingers, outstretched as if nothing was held therein.

Whatever we are acquainted with, is only an insignificant and infinitesimal manifestation of the Supreme Being. The description verily conveys His greatness, grandeur and glory. The hymn is a lucid comparison of man and human society.

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।
(Yv. XXXI.1)

Sahasrasirasa purusah sahasraksah sahasrapat.
Sa bhumim sarvata sprtva tyatisthaddasangulam.

Glowing Prayers

"O Lord, You are radiance; bestow radiance on me. You are the lasting vigour; bestow vigour on me. You are the strength, bestow manly strength on me. You are the vital force; bestow vital force on me. You are the conquering power, bestow the conquering power on me".

"May the Lord of mind purify me. May the Lord of speech purify me. May the Creator God purify me with the holeless strainer of sun's rays. O Lord of purification, purified by purity itself, enable me to achieve the desire of my heart with which I will purify myself".

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि बलमसि बलं मयि धेह्योजोऽस्योजो मयि धेहि मन्युरसि मन्युं मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि।।
(Yv. XIX.9)

चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।
(Yv. IV.4)

Tejo'si tejo mayi dhehi viryamasi viryam mayi dhehi balamasi balam mayi dhehyojo'syojo mayi dhehi manyurasi manyum mayi dhehi saho'si saho mayi dhehi..

Citpatirma punatu vakpatirma punatu devo ma savita punatvacchidrena pavitrena suryasya rasmibhih.

Tasya te pavitrapate pavitraputsya yatkamah pune tacchakeyam..

Meditation

"Enlightened men realise the Lord in the sacred cave of their heart. In Him, the whole Universe finds a common nest. All forms visible merge in Him at the moment of dissolution and spring forth from Him again during the creation. He is omnipotent, woven like warp and woof in all creatures."

"I have realised the Mighty Cosmic Man. He is all-pervading and all-knowing with sunlike lustre and far beyond the darkness of the physical realm. Surely, by knowing Him, one can overcome the miseries of death. There is no other way to reach the final goal."

वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्। तस्मिन्निदँ सं च वि चैति सर्वं सऽओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु।।
(Yv. XXXII.8)

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।
(Yv. XXXI.18)

Venastatpasyannihitam guha sadyatra visvam bhavatyekanidam. tasminnidam sam ca vi caiti sarvam sa otah protasca vibhuh prajasu..

Vedahametam purusam mahantam adityavarnam tamasah parastat. tameva viditvati mrtyumeti nanyah pantha vidyate'yanaya..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

प्रेरक प्रसंग

यह नर-नाहर कौन था?

यह घटना प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों की हैं। रियासत बहावलपुर के एक ग्राम में मुसलमानों का एक भारी जलसा हुआ। उत्सव की समाप्ति पर एक मौलाना ने घोषणा की कि कल दस बजे जामा मस्जिद में अछूत कहलाने वाले भाइयों को मुसलमान बनाया जाएगा, अत: सब मुसलमान नियत समय पर मस्जिद में पहुँच जाएँ।

इस घोषणा के होते ही एक युवक ने सभा के संचालकों से विनती की कि वह इसी विषय में पाँच मिनट के लिए अपने विचार रखना चाहता है। वह युवक स्टेज पर आया और कहा कि आज के इस भाषण को सुनकर मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि कल कुछ भाई मुसलमान बनेंगे। मेरा निवेदन है कि कल ठीक दस बजे मेरा एक भाषण होगा। यह वक्ता महोदय, आप सब भाई तथा हमारे वे भाई जो मुसलमान बनने की सोच रहे हैं, पहले मेरा भाषण सुन लें फिर जिसका जो जी चाहे सो करे। इतनी-सी बात कहकर वह युवक मंच से नीचे उतर आया।

अगले दिन उस युवक ने 'सार्वभौमिक धर्म' के विषय पर एक व्याख्यान दिया। उस व्याख्यान में कुरान, इञ्जील, गुरुग्रन्थ साहब आदि के प्रमाणों के अतिरिक्त वेद की महिमा पर विश्व के अनेक विद्वानों के प्रमाणों की झड़ी लगा दी। युक्तियों व प्रमाणों को सुन-सुनकर मुसलमान भी बड़े प्रभावित हुए।

इसका परिणाम यह हुआ कि एक भी दलित भाई मुसलमान न बना। जानते हो-धर्म-दीवाना, यह नर-नाहर कौन था?

उसका नाम पण्डित चमूपति था

मुस्लिम मौलाना लोग इससे बहुत खीजे और जनूनी मुसलमानों को पण्डितजी की जान लेने के लिए उकसाया गया। जनूनी इस साहस को सहन न कर सके। इसके बदले में वे पण्डितजी के प्राण लेने पर तुल गये। आर्यनेताओं ने पण्डितजी के प्राणों की रक्षा की समुचित व्यवस्था की।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा

17वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन

22 जनवरी, 2017 आर्यसमाज अशोक विहार-1

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **17वां परिचय सम्मेलन** का आयोजन 22 जनवरी, 2017 को आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1 दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या **910010001816166** IFSC - UTIB0000223 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन पत्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तिथि से 15 दिन पूर्व अवश्य प्राप्त हो जाने चाहिए, जिससे प्रत्याशी का विवरण पंजीयन पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। पंजीकरण फॉर्म को सभा की वेबसाईट **www. thearyasamaj.org** से डाउनलॉड किया जा सकता है तथा नीचे इसी पृष्ठ पर प्रकाशित भी किया गया है। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर **ऑनलाईन भी कर सकते हैं।** अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चद्दा, राष्ट्रीय संयोजक **(मो. 9414187428)**
एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली **(मो. 9540040324)**

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

ईश्वर प्रार्थना क्यों एवं कैसे विषय पर वैचारिक गोष्ठी सम्पन्न

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 नई दिल्ली के तत्त्वावधान में अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं के सहयोग से एक अद्वितीय वैचारिक संगोष्ठी का आयोजन 27 नवम्बर 2016 को आर्य ऑडिटोरियम ईस्ट ऑफ कैलाश में किया गया। गोष्ठी की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इसमें ईसाई एवं इस्लाम सहित सभी मतों के प्रामाणिक विद्वानों ने अपने-अपने मतानुसार 'प्रार्थना' विषय पर विविध आयामों पर प्रकाश डाला।

गोष्ठी में वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. वागीश, डॉ. विनय विद्यालंकार, प्रो. सैय्यद रजि अहमद कमाल, स्वामी प्रज्ञानन्द जी, प्रो. विक्टर एडविन एसजे एवं डॉ. मदन मोहन वर्मा ने अपने गवेषणात्मक विचार प्रस्तुत किए। गोष्ठी के मुख अतिथि डॉ. अशोक चौहान (संस्थापक अध्यक्ष, एमिटी) एवं डॉ. अमीता चौहान (चेयरपर्सन, एमिटी) रहे। अध्यक्षता सांची विश्वविद्यालय भोपाल की पूर्वकुलपति डॉ. शशि प्रभा कुमार ने की व आशीर्वाद स्वामी प्रणवानन्द जी का हुआ। कार्यक्रम में हीरो ग्रुप की मुंजाल शोवा कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री योगेश मुंजाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, टंकारा ट्रस्ट के मंत्री श्री अजय सहगल, दिल्ली संस्कृत अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, श्रीमती बाला चौधरी, श्री नीतिञ्जय चौधरी, झज्जर गुरुकुल के आचार्य विरजानन्द दैवकरणि आदि अनेक गणमान्यजन एवं अतिथि उपस्थित थे।

-राजीव चौधरी

आर्य समाज समाज तलवण्डी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज तलवण्डी का वार्षिकोत्सव 24 दिसम्बर 2016 को श्री राधा वल्लभ राठौर के संयोजन में सम्पन्न हुआ। दो दिवसीय कार्यक्रम में आगरा उ. प्र. से पधारे श्री हरि शंकर अग्निहोत्री ने आर्य समाज में पर्यावरण संरक्षण पर अपने विचार प्रकट किये। आर्य समाज जिला कोटा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने पर्यावरण बचाने के लिए जिला सभा के माध्यम से किये जा रहे वृक्षारोपण, जल संरक्षण, पॉलिथिन के विरुद्ध मुहिम इत्यादि कार्यक्रमों की जानकारी दी।

इस अवसर पर नगर विकास न्यास के चैयरमेन रामकुमार मेहता को केसरिया दुपट्टा ओढाकर, स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया तथा आर्य समाज की ओर से सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया।

चेयरमैन श्री रामकुमार मेहता ने कहा कि आर्यसमाज समाज को संस्कार एवं दिशा देने का कार्य तत्परता से कर रहा है। यज्ञ के माध्यम से आप परिवारों में संस्कारों को जीवित कर रहे हैं।

- आर. सी. आर्य, प्रधान

स्व. श्री राज कुमार शर्मा जी का 90वां जन्म दिवस सम्पन्न

आर्य समाज रेलवे रोड, शकूर बस्ती के पूर्व प्रधान स्व. श्री राजकुमार शर्मा जी का 90वां जन्मदिवस 23 दिसम्बर को मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ-प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

- मन्त्री

महात्मा प्रभु आश्रित जी का अर्धनिर्वाण शताब्दी समारोह

महात्मा प्रभु आश्रित अर्धनिर्वाण शताब्दी समारोह 16 से 19 मार्च 2017 के मध्य वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर रोहतक में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर 21 कुण्डीय यज्ञ, वेदपाठ, प्रचवन, भजन एवं योग के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाएंगे।

- शशि मुनि, प्रबन्धक

गंगा सागर मेला हावड़ा में आर्य समाज का नि:शुल्क शिविर

आर्य समाज हावड़ा के तत्त्वावधान में 12 से 15 जनवरी 2017 को गंगा सागर बस स्टैण्ड के पास 4 नं. रास्ता पर आर्य समाज का शिविर आयोजित किया जा रहा है। शिविर में ऋषि दयानन्द सरस्वती के उद्देश्य वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु वैदिक विद्वानों एवं भजनोंपदेशकों द्वारा प्रात: एवं सायं यज्ञ, भजन, प्रवचन आदि का कार्यक्रम किया जाएगा तथा वैदिक साहित्य व नि:शुल्क चिकित्सा की व्यवस्था भी की गई है। शिविर में सहयोग एवं सेवा दान देने के इच्छुक महानुभाव मो. 09339873012, 09874478696 पर सम्पर्क करें। - **प्रमोद अग्रवाल, मंत्री**

दर्शन योग साधना आश्रम, रोजड़ (गुजरात) की
दर्शन योग साधना आश्रम' विशिष्ट योजना

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड, गुजरात की ओर से 'दर्शन योग साधना आश्रम' के नाम से एक नई और विशिष्ट योजना का शुभारम्भ गीता प्रादुर्भाव की पुण्यभूमि कुरुक्षेत्र, हरियाणा में किया जा रहा है। वहां तीन बीधा भूमि में 4 साधना कुटियों का निर्माण कार्य चल रहा है। अब तक इस पुनीत कार्य में लगभग 30 लाख रुपये की राशि व्यय हो चुकी है। आश्रम में पुरुषों, माताओं, को ऐसा विशेष वातावरण युक्त स्थान मिलेगा जहां पर वे निश्चिन्त होकर पूरे मनोयोग से आजीवन या लम्बी साधना कर सकेंगे। इसके साथ नई पीढ़ी को भी विद्याप्राप्ति हेतु समुचित वातावरण उपलब्ध हो सकेगा। साथ ही अन्य साधारण धार्मिक जनों के लिए भी निरन्तर कार्य होते रहेंगे।

-आचार्य दिनेश कुमार, न्यासी

मैनेज़र/केयरटेकर की आवश्यकता

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत संचालित 'महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन स्कूल' धनश्री (असम), बामनिया (म.प्र.) तथा अन्य संस्थानों के लिए लिए मैनेज़र/ केयरटेकर की आवश्यकता है। आवास सुविधा, वेतन योग्यतानुसार देय। आर्यसमाजी पृष्ठभूमि एवं वानप्रस्थी, पूर्ण सक्षम (अनुभवी महानुभाव को प्रथमिकता) अपना विवरण aryasabha @yahoo.com पर ई मेल करें या चेयरमैन अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें। - ***महामन्त्री***

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है। **वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क** (दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

महिला आर्य समाज मानसरोवर जयपुर का 22वाँ स्थापना दिवस सम्पन्न

महिला आर्य समाज मानसरोवर जयपुर का 22वाँ स्थापना दिवस 10 से 13 नवम्बर 2016 तक अथर्ववेद पारायण यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा महात्मा चैतन्य मुनि एवं मां सत्य प्रिय यति थे। इस अवसर पर आचार्य उर्षबुद्ध जी एवं आचार्य चैतन्य मुनि के प्रभावशाली प्रवचन हुए। दिल्ली के युवा भजनोपदेशक श्री अंकित उपाध्याय, श्री जवाहर लाल वधवा, श्रीमती सुधा मित्तल एवं विनोद मेहरा जी ने भजनों की अमृत वर्षा की। समाज प्रधाना श्रीमती सरोज कालरा ने विद्वानों एवं आचार्यों को सम्मानित किया।

- ईश्वर दयाल माथुर, उपप्रधान

बलिदान दिवस पर आर्य समाज महाराजपुर में कार्यक्रम सम्पन्न

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर आर्य समाज महाराजपुर में श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें शासकीय छत्रसाल महाराजा महाविद्यालय के प्रोफेसर डी.के. शर्मा मुख्य अतिथि व श्री शहजाद सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रात:काल प्रभातफेरी निकाली गई जिसमें

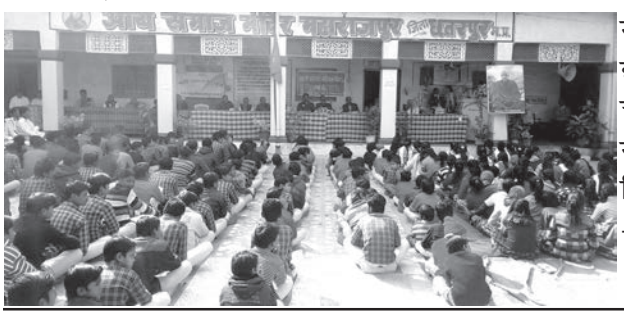

स्कूल के छात्र-छात्राओं के गगन चुम्बी नारों के साथ नगर का भ्रमण किया।

-इन्द्रप्रकाश आर्य, मंत्री

शोक समाचार

डॉ. नेकराम सिंह का निधन

आर्य समाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली के धर्माचार्य डॉ. कर्णदेव शास्त्री के श्वसुर डॉ. नेकराम सिंह जी का 93 वर्ष की अवस्था में दिनांक 21 दिसम्बर 2016 को प्रात: निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से मंगोलपुरी अवन्तिका शमशान घाट पर किया गया। डॉ. नेकराम जी अपने पीछे दो पुत्र व तीन पुत्रियां, पौत्र-प्रपोत्र, प्रपोत्री, धेवते-धेवतियां से भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सभा द्वारा प्रकाशित कैलेण्डर वर्ष 2017

मूल्य 1200/-रुपये सैकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग , दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 26 दिसम्बर, 2016 से रविवार 1 जनवरी, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 29/30 दिसम्बर, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 28 दिसम्बर 2016

पृष्ठ 5 का शेष

गुरुकुल रानीबाग व गुरुकुल गौतम नगर बधाई के पात्र हैं। पूरे रास्ते में यज्ञ की झांकी प्रसाद बांटते हुए व घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ का महत्त्व दर्शा रही थी। रास्ते में ग्रेन मर्चेन्ट एसो. नया बाजार, आर्य समाज नयाबांस, सुर्दशन पार्क, दीवान हॉल, सीताराम बाजार, महाशियां दी हट्टी, व कई और मार्केट एसोसिएशन ने विभिन्न स्थानों पर न केवल स्वागत किया बल्कि दूर-दूर से आये आर्यजनों तथा विभिन्न विद्यालयों व गुरुकुलों के विद्यार्थियों को प्रसाद भी वितरण किया।

रामलीला मैदान में ईश स्तुति व भजनोपदेशक के उपरान्त स्वामी प्रणवानन्द जी ने अपने आशीर्वचनों में स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए जोर देकर कहा कि 'आज भी गुरुकुल शिक्षा पद्धति का महत्त्व बहुत महत्त्वपूर्ण है और इसकी आवश्यकता भी है।' आर्य जगत् में प्रसिद्ध विद्वान संन्यासी स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती महान सुधारक थे जिन्होंने देश व समाज हित में अपनी समस्त सम्पत्ति दान कर दी व अपने दोनों बच्चों को गुरुकुल में दीक्षित कर, संसार को वैदिक ज्ञान दिया।

श्री सुरेन्द्र रैली ने आर्य जनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'हम अपने परिवार के सदस्यों को वैदिक शिक्षा, संस्कृति व धर्म से अवगत कराएं व भावी पीढ़ी को जोड़ते हुए सजग करें कि वह अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए आर्य समाज व सामाजिक उन्नति करें।'

डॉ. अशोक कुमार चौहान, संस्थापक अध्यक्ष एमिटी शिक्षण संस्थान ने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज एक प्रेरणादायी व क्रांतिकारी संस्था है जिसने मुझे सदैव मानवता की सेवा के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने कहा यदि हम आज सारे भारत एवं विश्वभर में शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसारकर पा रहे हैं तो उसके पीछे प्रेरणा केवल महर्षि दयानन्द जी एवं

श्रद्धानन्द जी जानते थे जहां अशिक्षा और गरीबी होती है वहां पाखण्ड जल्दी पैर पसारता है -मा. रामपाल, प्रधान, हरियाणा सभा

आर्यसमाज की है। जो प्रेरणा स्वामी श्रद्धानन्द जी को महर्षि दयानन्द से मिली उन्होंने गुरुकुल प्रणाली को पुनः जागृत किया। आज हम सबको उनका स्मरण करते हुए उसी प्रणाली को और अधिक मजबूत करने का प्रयास करें, यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्री आनन्द चौहान जी ने इस अवसर पर सब आर्यजनों को स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेने का निवेदन किया।

श्री सुरेशचन्द्र आर्य प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने मंच को सुशोभित करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि 'राष्ट्र हितैषी स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान देश के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है।' श्री मनोहर लाल कुमार, अध्यक्ष सनातन धर्म सभा को स्मृति चिह्न व पीत वस्त्र से अभिनन्दन किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के नवनिर्वाचित प्रधान मा. रामपाल व उपपधान श्री कन्हैया लाल का स्वागत किया गया। मा. रामपाल जी ने अपने भाषण में कहा 'स्वामी श्रद्धानन्द जी जानते थे अशिक्षा और गरीबी जहां होती है वहां बहुत जल्द पाखण्ड अपने पैर पसारने लगता है। इसीलिए उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा को बढ़ावा दिया।

डॉ. सत्यपाल सिंह सांसद ने एक हिन्दू राष्ट्र मंदिर बनाए जाने पर जोर देते हुए बहुत ही सुन्दर पक्तियों में स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों को प्रस्तुत किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने राष्ट्र उन्नति, राष्ट्रीय एकता व समाज को शिक्षित करने के लिए अनेक आन्दोलन चलाए।

इस अवसर पर श्री ऋषिराज वर्मा को वेद प्रकाश कथूरिया स्मृति पुरस्कार, श्री वरुणेन्द्र कथूरिया को डॉ. मुमुक्षु आर्य अमर शहीद पं.राम प्रसाद बिस्मिल स्मृति पुरस्कार, श्री सुरेन्द्र सिंह नेगी को पं. ब्रह्मानन्द शर्मा आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार, श्री बाल कृष्ण आर्य को लख्मी चन्द भूरो देवी स्मृति पुरस्कार व श्री दिनेश आर्य को महात्मा प्रभु आश्रित स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रतिष्ठा में,

समारोह में उपस्थित समस्त आर्यजनों के लिए वेद प्रचार मण्डल उत्तर-पश्चिमी दिल्ली की ओर से ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई। मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य सहित श्री देवेन्द्र आर्य, श्री वीरेन्द्र आर्य व श्री महेश आर्य (रानीबाग), श्री सुरेन्द्र चौधरी, श्री आशीष आर्य, श्री नरेश पाल व श्रीमती शालिनी आर्य, श्री नीरज आर्य व श्रीमती अनीता आर्य (पटेल नगर) एवं साथियों ने लंगर वितरण में सहयोग करके महर्षि के ऋण को उऋण करने का प्रयास किया।

मंच संचालन श्री सुरेन्द्र रैली, श्री विनय आर्य व श्री सतीश चड्डा ने किया।

– *महामन्त्री*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह